पाठ 21

52J3H1

भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय

(प्रस्तुत पाठ में महामना मदन मोहन मालवीय के जीवनवृत्त का वर्णन किया गया है)

महामना मदन मोहन मालवीय का जन्म ऐसे कालखण्ड में हुआ था, जिस समय भारत नव जागरण के साथ-साथ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्षरत था। जिस काल में मालवीय जी का जन्म हुआ वह समय भारत में बौद्धिक और वैचारिक जागरण का था। उस समय बहुत से समाज सुधारक तथा चिन्तक भारत देश को उसकी मूल राष्ट्रीय और आध्यात्मिक चेतना की ओर लौटाने के लिए प्रयासरत थे।

महामना मदन मोहन मालवीय ने भारतीय स्वतंत्रता की ऐसी नींव रखी जिसके परिणाम स्वरूप 15 अगस्त 1947 ई0 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। महामना मदन मोहन मालवीय भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के नायक और साक्षी थे। इनका जन्म 25 दिसम्बर, 1861 ई0 को प्रयाग में हुआ था। उनके पिता पण्डित ब्रजनाथ चतुर्वेदी और माता श्रीमती मूनादेवी थीं। इनके पिता भगवद्गीता के व्याख्याकार और कथावाचक के रूप में अत्यधिक प्रसिद्ध थे। मदन मोहन को हिन्दू (सनातन) जीवन दर्शन और संस्कार अपने पूर्वजांे की सांस्कृतिक विरासत से प्राप्त हुआ था। मालवीय जी के पूर्वज 15वीं शताब्दी में मालवा प्रदेश से आकर प्रयाग में बस गये थे और स्थानवाची (मल्लई) अथवा 'चैबे' उपनाम से

जाने गये। मल्लई शब्द को पं0 मदन मोहन ने मालवीय बनाया। तब से सारे मल्लई मालवीय कहे जाने लगे। महामना मालवीय ने गवर्नमेंट हाईस्कूल से शिक्षा प्राप्त करते हुए अंग्रेजी के साथ संस्कृत का गहन अध्ययन किया। आपने म्योर सेण्ट्रल कालेज से बी0ए0 की परीक्षा उŸाीर्ण की।

महामना मदन मोहन मालवीय जी वैदिक (हिन्दू) धर्म और संस्कृति के सच्चे अनुयायी थे। वे तत्कालीन भारत में व्याप्त समस्याओं के समाधान का विकल्प हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान को मानते थे। उनका दृष्टिकोण था कि हिन्दू धर्म के दर्शन द्वारा ही विश्वबन्धुत्व के भाव को जाग्रत किया जा सकता है। अपने इस दिवास्वप्न को पूर्ण करने के लिए उन्हांेने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज की सेवा में समर्पित कर दिया तथा विभिन्न संगठनों के माध्यम से अपने विचारों को व्यावहारिक स्वरुप प्रदान किया।

मालवीय जी ने गंगा के अविरल प्रवाह के लिए 1914 में हरिद्वार में तथा 1924 में प्रयाग में सत्याग्रह किया। उनका मानना था कि गंगा हिन्दुओं के धार्मिक आस्था और विश्वास का प्रतीक है। अतः उसकी धारा बिल्कुल प्राकृतिक होनी चाहिए।

मालवीय जी छुआ-छूत, अस्पृश्यता के घोर विरोधी थे। वे इसे कलंक और राष्ट्रीय विकास के मार्ग में बाधा मानते थे। उन्हांेने पौराणिक उद्धरणों के माध्यम से अस्पृश्यता समाप्ति सम्बन्धी अपनी मीमांसा को व्यक्त किया है। स्त्रियों के प्रति अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा था कि मैं चाहता हँू कि हमारे देश की सभी स्त्रियाँ अंग्रेज महिलाओं की भाँति पिस्तौल और बन्दूके रखें और उनको चलाना सीखें ताकि वे किसी भी आक्रमण से अपनी रक्षा कर सकें। उन्होंने जनता से अनुरोध किया कि वे उन सब सामाजिक कुरीतियों को दूर करें जो स्त्री जाति की उन्नति में बाधक हैं। वे बाल विवाह के घोर विरोधी थे। उन्हांेने सामाजिक उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा पर विशेष जोर दिया।

पण्डित मदन मोहन मालवीय ने समाज के पुनरुद्धार के लिए जिन विशयों को केन्द्र में रखा उनमें गौ-रक्षा भी प्रमुख विषय था। उनका मानना था कि गौ भारतीय संस्कृति का सनातन केन्द्र बिन्दु है। इसके लिए उन्होंने गौ-रक्षा आन्दोलन भी चलाएं।

महामना मदन मोहन मालवीय एक राजनीतिज्ञ से अधिक शिक्षाशास्त्री थे। उनका मानना था कि हमारी सारी समस्याओं की जड़ अशिक्षा है। वे शिक्षा को पुरातन एवं नवीनतम मूल्यों के बीच एक सेतु के रूप में देखते थे। इन्हीं धारणाओं को ध्यान मंे रखकर मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। मालवीय जी का सपना था कि सभी स्तर पर शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध हो कि कोई भी बच्चा गरीबी के कारण शिक्षा से वंचित न रह पाये।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 5 फरवरी 1916 ई0 में बसन्त पंचमी के दिन हुई। निःसन्देह मालवीय जी की यह सबसे बड़ी कृति है। मालवीय जी कोई राजा-महाराजा नहीं थे। सन्तोष ही उनका परम धन था फिर भी अपने स्वप्न को पूरा करने के लिए झोला उठा लिया। सर्वप्रथम अपने पिता से 50 रूपये का दान पाकर उन्हांेने फकीरी धारण की और जीवनपर्यन्त फकीर ही रहे। उन्होंने लोगों से भिक्षा माँगकर तथा राजे-महाराजों को कल्याण के लिए प्रेरित कर धन इकट्ठा किया। हिन्दू और मुसलमान समान रूप से इस महायज्ञ में भाग ले रहे थे।

इस प्रकार अपने साहस, उत्साह लगन और तपस्या के द्वारा मालवीय जी ने अपनी कल्पना को मूर्त रूप दिया। वे काशी हिन्दू विष्वविद्यालय को ऐसा केन्द्र बनाना चाहते थे, जिससे राष्ट्र की आध्यात्मिक एवं भौतिक शक्ति के विकास में योगदान तो मिले ही साथ ही विश्व में शान्ति एवं बन्धुत्व की गाथा का भी प्रचार-प्रसार होता रहे।

महामना मालवीय बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने भारतीय राजनीति, शिक्षा, साहित्य एवं पत्रकारिता में अपनी अमिट छाप छोड़ी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अलावा उन्होंने अनेक छोटी-छोटी संस्थाओं को खड़ा किया। राष्ट्र निर्माण में इन संस्थाओं की भूमिका मील का पत्थर है। इन संस्थाओं में हिन्दू छात्रावास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भारती भवन पुस्तकालय का स्थान महत्वपूर्ण है।

महामना मदन मोहन मालवीय ने अध्ययन अध्यापन के साथ-साथ कई समाचार-पत्रों का संपादन किया तथा तत्कालीन ब्रिटिश शासन की नीतियों का प्रबल विरोध किया। मालवीय जी का निधन 12 नवम्बर 1946 ई0 में हुआ। विलक्षण प्रतिभा के धनी राष्ट्र

नायक मालवीय जी के महान कार्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए भारत सरकार द्वारा 30 मार्च, 2015 ई0 को इन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया।

शब्दार्थ

अनुयायी=अनुकरण करने वाला। **पुनरुत्थान**=पतन के बाद फिर से उठना या उन्नति करना। **तत्कालीन**=उस समय का । **दिवास्वप्न**=दिन में देखे जाने वाला स्वप्न। **मीमांसा**=अनुमान, तर्क द्वारा किसी बात का निर्णय करना । **कुरीतियाँ**=कुप्रथाएँ । **सर्वांगीण**=सब अंगों से युक्त, सम्पूर्ण। **अपरिहार्य**=जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके, अनिवार्य।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1-मालवीय जी ने बड़े-बड़े राजा महाराजों से चन्दा माँग कर विष्वविद्यालय की स्थापना के लिए धन इकट्ठा किया। उनके भिक्षाटन के अनेक रोचक प्रसंग हैं, आप अपने शिक्षक या घर के बड़ों की सहायता से उन प्रसंगों को जानिए और लिखिए।

2-मालवीय जी ने अनेक समाचार-पत्रों का संपादन किया। पता लगाइए कि वे समाचार पत्र कौन-कौन से थे ?

3-मालवीय जी को भारत रत्न पुरस्कार मिला था। आप इण्टरनेट/अन्य माध्यमों की मदद से

भारत रत्न प्राप्त महान लोगों की सूची बनाइये।

विचार और कल्पना

1- मालवीय जी ने तत्कालीन समाज की समस्याओं पर आवाज उठाई। आपके विचार से तत्कालीन समाज में क्या-क्या समस्याएँ रही होंगी जिन पर उन्होंने आवाज उठायी ?

2- भारतीय संस्कृति में गाय को माता कहा गया है। इस संबंध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

3- मालवीय जी ने सभी के लिए शिक्षा की बात कही थी। आज सरकार ने शिक्षा के अधिकार के तहत इसे पूरे देश में लागू कर दिया। कल्पना कीजिए कि जब यह व्यवस्था नहीं रही होगी तो शिक्षा प्राप्त करने में कौन-कौन सी कठिनाइयाँ होती होंगी ? लिखिए।

4- मालवीय जी चाहते थे कि गंगा की धारा को कहींे रोका न जाय क्योंकि गंगा केवल नदी नहीं बल्कि संस्कृति की धारा है। आज गंगा प्रदूषण की शिकार हो गयी है। सोचिए जिस दिन गंगा नहीं रहेगी उस दिन क्या होगा ? इस सम्बंध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

5-आपके विचार में वर्तमान समाज की क्या-क्या समस्याएँ हैं ? उनके क्या समाधान हो सकते हैं ?

जीवनी से

1.महामना मदन मोहन मालवीय का जन्म कब और कहाँ हुआ था? इनके माता पिता का क्या नाम था ?

2-मदन मोहन और उनके वंशज मालवीय क्यों कहे गये ?

3-मालवीय जी के जन्म के समय भारत की स्थिति कैसी थी ?

4-महामना ने तत्कालीन भारत में समस्याओं के समाधान का विकल्प किसे माना है और क्यों?

5-महामना मालवीय का दिवास्वप्न क्या था ?

6-उन्होंने तत्कालीन समाज में फैली किन-किन समस्याओं पर कुठाराघात किया ?

7-स्त्रियों के प्रति मालवीय जी का क्या दृष्टिकोण था ?

8-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे मालवीय जी की क्या सोच थी ?

भाषा की बात

1- पाठ में ‘साथ-साथ’ शब्द आया है जो पुनरुक्त शब्द है। इसी प्रकार दिये गये पुनरुक्त शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

अपना-अपना, धीरे-धीरे, छोटे-छोटे, हँसते-हँसते, पानी-पानी

2- निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए-

साधारण वाक्य - सरला ने कहा, मै कल आऊँगी।

निषेधात्मक वाक्य - सरला ने कहा, मैं नही आऊँगी।

प्रश्नवाचक - सरला ने कहा, मैं कल क्यों आऊँगी ?

इसी प्रकार के दो-दो वाक्य स्वयं बनाकर लिखिए।

3- निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

जैसे- जो अनुकरण करने योग्य हो - अनुकरणीय

(क) युग का निर्माण करने वाला। ....

(ख) जो सबको समान भाव से देखता हो। ....

(ग) जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते प्रतीत हों। ....

(घ) जिसका कोई खण्ड न हो सके। ....

4- इस पाठ को पढ़कर आपके मन में महामना मदन मोहन मालवीय के व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएं उभर रही होंगी। उन विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए।

शिक्षण संकेत- श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रयोग करते हुए महामना पं0 मदन मोहन मालवीय के जीवन की अन्य घटनाओं से बच्चों को अवगत कराएँ।